अध्याय-3

शहरी जीवन-यापन के स्वरूप

शहर

हमने पिछले अध्याय में ग्रामीण जीवन–यापन के विभिन्न स्वरूपों के बारे में जाना है। गाँव के लोग कौन–कौन से कार्य करके अपनी आजीविका चलाते हैं। इस अध्याय में हम शहरों में रहने वाले लोगों के जीवन–यापन के बारे में जानेंगे।

भारत में पाँच हजार से ज्यादा शहर और कई महानगर हैं। इन महानगरों में दस लाख से भी ज्यादा लोग रहते हैं और काम करते हैं। कहते हैं कि शहर में जिन्दगी कभी रुकती नहीं। चलो, एक शहर में जाकर देखें कि वहाँ लोग क्या काम करते हैं? क्या वे नौकरी करते हैं या अपने व्यवसाय में लगे हैं? वे अपना जीवन कैसे चलाते हैं? क्या रोजगार और कमाई के मौके समान रूप से सभी को मिलते हैं?

यह बिहार की राजधानी पटना है। यहाँ लाखों लोग रहते हैं। यह बहुत बड़ा शहर है। मैं अक्सर यहाँ आती हूँ। लेकिन रहने का मौका बहुत ही कम मिलता है। यहाँ मेरे मामा रहते हैं। एक बार मेरे ममेरे भाई–बहन के बहुत जिद करने पर मैं यहाँ रुक गई। तब मुझे पटना शहर और वहाँ के लोगों को जानने का मौका मिला।

फुटपाथ, पटरी पर काम करने वाले–

फुटपाथ

हम सुबह ही घर से निकल गए थे। जैसे ही हम मुख्य सड़क की तरफ मुड़े, हमने देखा कि वहाँ काफी चहल–पहल थी। सब्जी एवं फल बेचने वाले अपने ठेले पर सब्जी एवं फल सजा रहे थे। तो वहीं सब्जी और फल वाला घर–घर बेचने के लिए अपना ठेला लिए जा रहा था। वहीं एक महिला बेचने के लिए टोकरी में कुछ पूजा सामग्री लेकर बैठी थी।

अखबार विक्रेता

चर्मकार

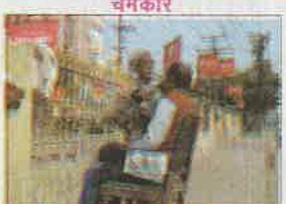
नाई

सड़क के दूसरी तरफ एक व्यक्ति टेबल पर कई तरह के अखबार रखकर बेच रहा था। कुछ लोग अखबार पढ़ रहे थे, तो कुछ लोग खरीद कर ले जा रहे थे।

ऑटो रिक्शा स्कूल के बच्चों से ठसाठस भरा हुआ हार्न बजाता हुआ गुजर रहा था। पास में एक पेड़ था जिसके निकट एक मंदिर था। पेड़ के नीचे मोची अपने टिन के बक्से से सामान निकाल रहा था। पास में एक नाई अपना काम शुरू कर चुका था। थोड़ी दूर पर एक सैलून था जहाँ कुछ नौजवान दाढ़ी बनवाने एवं केश कटाने के लिए जा रहे थे। सड़क के किनारे बैठा नाई कम ही पैसे में दाढ़ी बना देता था। सड़क से थोड़ी दूर जाकर एक व्यक्ति ठेला पर तरह–तरह के बर्तन जैसे

थाली, कटोरी, चायछन्ना, कप आदि बेच रहा था जिसे हमलोग प्रायः इस्तेमाल करते हैं। ये सभी लोग स्वरोजगार में लगे हुए हैं। उनको कोई दूसरा व्यक्ति रोजगार नहीं देता है। उन्हें अपना काम स्वयं ही संभालना पड़ता है। वे स्वयं योजना बनाते हैं कि किन–किन चीजों को बेचे, माल कितना खरीदें, कहाँ से खरीदें अपनी दुकान कहाँ लगाए? उनकी दुकानें अस्थायी होती हैं। कभी वे सड़क के किनारे चादर या चटाई बिछाकर दुकान लगा लेते हैं तो कभी खम्भों पर तिरपाल या प्लास्टिक चढ़ा कर दुकान लगाते हैं। ये रोज खरीदते हैं, रोज बेचते हैं, इनकी कमाई कम होती है। इनकी आय मजदूरों जैसी है पर ये अपना व्यवसाय खुद चलाते हैं। इन सभी व्यापारी को **पटरी वाला व्यापारी** कहा जाता है। ये व्यापारी सड़कों के किनारे फुटपाथ पर रखकर अपना सामान बेचते हैं। ये अपनी दुकान ऐसे स्थान पर लगाते हैं जहाँ खूब भीड़ रहती है। इनके द्वारा बेची जाने वाली वस्तुएँ दैनिक उपयोग की होती है। ग्राहकों के लिए इनसे सामान खरीदना बहुत आसान होता है, क्योंकि जब भी हम कहीं आते–जाते हैं तो प्रायः ये रास्ते के किनारे ही बैठे होते हैं और बिना अधिक समय व्यय किए हम आसानी से मनपसंद सामान खरीद सकते हैं। ठेलेवाले जो चीजें बेचते हैं वे अक्सर घर पर उनके परिवारवाले बनाते हैं। उदाहरण के लिए सड़कों पर गुप–चुप, समोसे, चाट, भुंजा आदि। यह ज्यादातर घर पर ही तैयार किया जाता है।

इन व्यापारियों के पास कोई सुरक्षा नहीं होती है। पुलिस या नगर निगम वाले इन्हें तंग भी करते हैं। उनको अक्सर दुकान हटाने के लिए कहा जाता है।

हमारे देश के शहरी इलाकों में लगभग एक करोड़ लोग फुटपाथ और ठेलों पर सामान बेचते हैं। बहुत सी जगहों पर इस काम को यातायात और पैदल चलने वाले लोगों के लिए एक रुकावट की तरह देखा जाता है। लेकिन कुछ संस्थाओं के प्रयास से अब इसको सभी के लिए उपयोगी और आजीविका कमाने के अधिकार के रूप में देखा जा रहा है। कानून में बदलाव आने से उनके पास काम करने की जगह होगी और यातायात एवं लोगों का आवागमन भी सहज रूप से हो पायेगा।

प्रश्न –

1. किन आधारों पर कहेंगे कि फुटपाथ या पटरी पर काम करने वाले स्वरोजगार में लगे होते हैं?
2. अपने आस–पास के फुटपाथ पर फल की दुकान लगाने वाले किसी व्यक्ति से पूछ कर बताओ कि उसकी दिनचर्या जैसे वह फल कहाँ से एवं कब खरीदता है?वह सुबह दुकान कब लगाता है? शाम को दुकान कब उठाता है? यानी वे दिन भर में कितने घंटे काम करते हैं? इस काम में उनके परिवार के सदस्य क्या मदद करते हैं?

चलतें–चलते मैं थक गई और मैं बाजार जाने के लिए उस जगह पर आ गई जहाँ रिक्शेवाले कतार में खड़े होकर सवारी का इन्तजार कर रहे थे। हमने एक रिक्शे वाले को बाजार जाने के लिए तय किया।

श्यामनारायण

एक रिक्शाचालक

रिक्शा चालक

गाँव से काफी लोग काम की तलाश में शहर आते हैं। उसी में से श्यामनारायण भी एक है। वह भभुआ जिले का कृषक मजदूर है। उसके पास जमीन नहीं है। गाँवों में साल भर खेती में मजदूरों की आवश्यकता नहीं होती है। ये फसल के कटाई–बुवाई के समय गाँवों में काम करते हैं। इस काम से जो कमाई होती है उससे परिवार का खर्च नहीं चल पाता है। इसलिए जब खेतों में काम नहीं मिलता है तो ये शहर आकर रिक्शा चलाते हैं। यह इनका प्रतिदिन का काम है किन्तु तबीयत खराब होने की स्थिति में कमाई नहीं हो पाती।

ये रैन–बसेरा में रात गुजारते हैं। रोज 150–200 रु. इनकी कमाई होती है। अगर इनका अपना रिक्शा नहीं होता है तो ये रिक्शा का भाड़ा प्रतिदिन 30–35 रु. रिक्शा मालिक को देते हैं। प्रतिदिन 60–70 रु. खाने एवं अन्य जरूरतों में खर्च हो जाते हैं। बाकी पैसा ये परिवार के लिए बचा लेते हैं। 20–25 दिनों पर एकबार परिवार से मिलने गाँव भी चले जाते हैं। इसी पैसे से परिवार का जीवन–यापन चलता है। कभी–कभी इनके घर की महिलायें भी मजदूरी करके कुछ कमा लेती हैं।

रैन बसेरा

प्रश्न–

1. श्यामनारायण कुछ समय शहर में एवं कुछ समय गाँव में रहता है। क्यों?

2. श्यामनारायण रैन–बसेरा में क्यों रहता है?

बाजार में :

जब हम बोरिंग रोड बाजार पहुँचे तो दुकानें खुलनी शुरू ही हुई थीं। लेकिन त्योहार के कारण वहाँ बहुत भीड़ हो चुकी थी। वहाँ कपड़े, चप्पल, बर्तन, बिजली के सामान, मिठाई आदि की दुकानों की लम्बी कतार थी। हमलोग एक रेडिमेड कपड़े के शोरूम में गए। वहाँ से मुझे कुछ कपड़े लेने थे। यह तीन मंजिला शोरूम था और हर मंजिल पर अलग प्रकार के कपड़े थे। बाजार में ही एक–दो डॉक्टर की क्लीनिक भी थी। वहाँ भी लोगों की भीड़ थी।

बहुमंजिला दुकान

कपड़े का दुकान

बड़ी दुकान में

मैं अपने मामा जी के साथ एक बड़ी दुकान में पहुंची और वहाँ बैठे दुकानदार से बात करना शुरू किया एवं उसके बारे में जानना चाहा।

प्रमोद– पहले मेरे पिता जी व चाचा एक छोटी सी दुकान चलाते थे। रविवार और त्योहारों के अवसर पर मैं अपनी माँ के साथ उनकी मदद करता था। अपनी स्नातक तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद मैंने भी काम करना शुरू किया। इस समय मैं अपनी पत्नी अंशु के साथ यह शोरूम चलाता हूँ।

अंशु– हमने कुछ सालों पहले यह शोरूम खोला है। मैं ड्रेस डिजायनर हूँ। मैं इसके साथ बुटिक भी चलाती हूँ। मैं इसी की पढ़ाई की हूँ। आजकल युवावर्ग तथा बच्चे आकर्षक कपड़े पहनना पसंद करते हैं। इसको ध्यान में रखकर हमने रेडीमेड कपड़ों को आकर्षक रूप में सजाकर यह शोरूम खोला।

हम अपने शोरूम के लिए माल दिल्ली, मुम्बई, अहमदाबाद से मंगवाते हैं। कभी–कभी कुछ कपड़े विदेशों से भी मंगवाते हैं। शोरूम के प्रचार–प्रसार के लिए हम विज्ञापन भी देते हैं। इससे हमारे व्यापार में बढ़ोतरी हुई है। इससे हमारा जीवन–स्तर ऊँचा हो गया है। हमने एक कार भी खरीदी है और एक मकान भी बनवाया है जो बाजार से कुछ दूरी पर है।

प्रमोद और अंशु जैसे बहुत सारे लोग हैं जो शहरों में अपनी दुकानें चलाते हैं। ये दुकानें छोटी–बड़ी हैं और लोग अलग–अलग चीजें बेचते हैं। ज्यादातर व्यापारी अपनी दुकान या व्यापार खुद संभालते हैं। वे किसी दूसरों की नौकरी नहीं करते बल्कि दूसरों को नौकरी पर रखते हैं। जैसे मैनेजर, सहायक, गार्ड, साफ–सफाई के लिए कर्मचारी आदि। कुछ लोग दुकान किराए पर लेते हैं। इन्हें दुकान का मालिक कभी भी दुकान खाली करने या किराया बढ़ाने के लिए कह सकता है। इनकी सुरक्षा अपनी दुकान वालों से कुछ कम होती है लेकिन इनकी भी कमाई अच्छी होती है।

ये दुकाने पक्की होती हैं। इनके पास नगर निगम के लाईसेंस होते हैं। नगर निगम के अनुसार इनकी दुकान सप्ताह में एक दिन बंद होती है। उदाहरण के लिए कुछ बाजार की दुकानें रविवार को, कुछ सोमवार को, तो कुछ मंगलवार को बंद रहती है। इन बाजारों में छोटे–छोटे दफ्तर और अन्य दुकानें भी हैं जो कुरियर, पीसीओ(फोन), फोटोस्टेट आदि की सुविधाएँ देती हैं।

प्रश्न –

1. जो बाजार में सामान बेचते हैं और जो सड़कों पर सामान बेचते हैं उनमें क्या अन्तर है?
2. प्रमोद और अंशु ने एक बड़ी दुकान क्यों शुरू की? उनको यह दुकान चलाने के लिए कौन–कौन से कार्य करने पड़ते हैं?

फैक्ट्री में :

मुझे हाथों की कढ़ाई वाला एक चादर खरीदना था। मेरी बहन ने कहा चलो मैं तुम्हें आकांक्षा के पास ले जाती हूँ। वो बहुत अच्छी कढ़ाई करती है और इसी तरह की एक फैक्ट्री (कपड़ा मिल) में काम भी करती है। यह फैक्ट्री शहर के एक कोने पर था। हम लोगों ने कुछ दूरी रिक्शा से तय किए। स्टैण्ड से बस लेकर फैक्ट्री के लिए चले। बस में काफी भीड़ थी। उस फैक्ट्री में काम करने वाले बहुत सारे लोग इसी बस पर थे। कुछ देर बाद बस एक मोड़ पर ठहर गई।

मोड़ पर बहुत सारे लोगों का झुंड दिखाई दे रहा था। उनमें से कुछ खड़े थे और कुछ दुकान के बाहर बैठे थे। कुछ लोग स्कूटर, मोटरसाइकिलों पर सवार होकर इनसे बातचीत कर रहे थे। मेरी बहन ने बताया कि यह 'लेबर चौक' है, ये प्रतिदिन काम करने वाले मजदूर या मिस्त्री है। कुछ, जहाँ भवन बन रहे होते हैं वहाँ मजदूरी करते हैं। कुछ, घरों या दुकानों में रंगाई पुताई का भी काम करते हैं। कुछ लोग टेलीफोन की लाईन और पानी की पाईप के लिए खुदाई का काम करते हैं, लेकिन इन्हें हमेशा काम नहीं मिलता। ऐसे काफी अनियमित मजदूर शहर में है।

लेबर चौक

कुछ देर में हम लोग फैक्ट्री पहुंच गये। हम फैक्ट्री में घुसे तो हमने पाया कि वहाँ इस

काम में बहुत सारे लोग लगे हुए थे। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि इस काम में इतने लोग लगे हुए होंगे। छोटे–छोटे काम व्यक्तियों में बंटे हुए थे। यहां हाथ और मशीन दोनों से यह काम हो रहा था। कुछ लोग नाप कर कपड़े काट रहे थे कुछ कढ़ाई कर रहे थे। कुछ उसमें डिजाइन छाप रहे थे, कुछ पैकिंग में लगे हुए थे।

जिस तरफ कढ़ाई का काम हो रहा था वहाँ हमलोगों ने नजर दौड़ाई तो आकांक्षा वहीं अपने काम में लगी हुई थी। जब मेरी बहन ने उसे आवाज दी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। मेरा परिचय पूछा। मैंने परिचय देते हुए आने का कारण बताया। वह हमलोगों को एक कमरे में ले गई जहाँ चादर तैयार करके रखी जाती थी। आकांक्षा ने मुझसे कुछ दिनों का समय मांगा और चादर पर कढ़ाई करने का वादा किया।

आकांक्षा चादर बनाने वाले एक बड़े कारखाने में काम करती है। जिस कारखाने में वह काम करती है वहाँ से चादर बड़े–बड़े थोक एवं खुदरा व्यापारियों के यहाँ जाता है। सिर्फ बिहार में ही नहीं बल्कि बिहार के बाहर, कई शहरों में इनके चादर बेचे जाते हैं। दिसम्बर से अप्रैल तक आकांक्षा पर काम का बोझ बहुत ज्यादा रहता है, क्योंकि उस समय बाहर से इनके द्वारा बनाये गये सामान की मांग ज्यादा होती है। अक्सर वह 9 बजे सुबह काम शुरू करती है और रात के 8 बजे तक ही काम निपट पाता है। वह सप्ताह में छः दिन काम करती है किन्तु जब काम जल्दी का होता है तो उन्हें रविवार को भी काम करना पड़ता है। उसे एक दिन काम करने के 100 रु. मिलते हैं और अतिरिक्त 50 रु. देर तक काम करने का मिलता है। कुछ ही कारीगर ऐसे हैं जिन्हें स्थाई रूप से रखा जाता है। आकांक्षा जैसे बहुत सारे कारीगर को बरसात में कार्यमुक्त कर दिया जाता है। करीब तीन से चार महीने के लिए उनके पास काम नहीं रहता है।

आकांक्षा की तरह बहुत सारे लोग इस कारखाने में व अन्य जगहों पर हैं जिन्हें वर्ष भर काम नहीं मिलता। ये अनियमित रूप से काम में लगे होते हैं, इन्हें बचे हुये समय में दूसरा काम ढूँढ़ना पड़ता है। ऐसे लोगों की नौकरियाँ स्थायी नहीं होती। अगर कारीगर अपनी तनख्वाह या परिस्थितियों के बारे में शिकायत करते हैं तो उन्हें निकाल दिया जाता है। नौकरी की कोई सुरक्षा नहीं है।

प्रश्न –

1. आकांक्षा जैसे लोगों की नौकरी की कोई सुरक्षा नहीं है। ऐसा आप किस आधार पर कह सकते हैं?
2. आकांक्षा जैसे लोग अनियमित रूप से काम पर रखे जाते हैं। ऐसा क्यों है?

दफ्तर में :

दूसरे दिन मैं अपनी मामी से मिलने उनके कार्यालय में गई। मेरी मामी बैंक में कार्यरत है। वह वहाँ शाखा प्रबंधक (ब्रांच मैनेजर) हैं। उन्होंने कहा था कि शाम में साढ़े पाँच बजे से पहले मेरे बैंक पहुँच जाना। बैंक ऐसी जगह पर था जहाँ चारों तरफ बड़ी–बड़ी इमारत थी। शॉपिंग कम्पलेक्स भी थे। कार पार्किंग भी थी। मामी सप्ताह में छः दिन काम पर जाती है।

बैंक

प्रतिदिन वह साढ़े नौ बजे काम पर जाती और साढ़े पाँच बजे वापस आती हैं। कभी–कभी वह अपना काम घर पर भी निपटाती हैं। वह एक स्थायी कर्मचारी है। स्थायी कर्मचारी होने के कारण उनको निम्नलिखित फायदे भी मिलते हैं।

बुढ़ापे के लिए बचत– उनके वेतन का एक हिस्सा भविष्य निधि में जमा होता है। इस

बचत पर ब्याज भी मिलता है। नौकरी से सेवानिवृत होने पर यह पैसा मिल जाता है। सेवानिवृति के बाद भी नियमित पेंशन सरकार देती है।

अवकाश – रविवार और अन्य पर्व–त्योहारों में छुट्टी मिलती है। वार्षिक छुट्टी के रूप में भी कुछ दिन मिलते हैं।

परिवार के लिए चिकित्सा की सुविधाएँ – सरकार एक सीमा तक कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्यों के इलाज का खर्च उठाती है।

इस तरह के कई कर्मचारी हैं जो किसी कंपनी में या किसी सरकारी कार्यालय में काम करते हैं, जैसे–सचिवालय, शिक्षा विभाग, दूरसंचार विभाग तथा भारत सरकार एवं राज्य सरकार के उपक्रमों में काम करने वाले कर्मचारी आदि। यहाँ उन्हें नियमित और स्थायी कर्मचारी की तरह रोजगार मिलता है। उनका विभाग एवं कार्य तय होता है। उनको समय पर वेतन मिलता है। काम नहीं होने पर भी उन्हें अनियमित मजदूरों की तरह निकाला नहीं जाता।

हम मामी के साथ उनकी कार में बैठ गए। कार घर की ओर दौड़ पड़ी। रास्ते में मामी ने बताया कि हमें नई काम करने वाली (नौकरानी) मिल गई है। हमारे सहकर्मी के यहाँ भी वह काम करती है। उसका नाम सरला है।

सरला की तरह यहाँ बहुत सारे लोग हैं जो घरों में अपनी सेवा देते हैं। ये दूसरे के घर जाकर बर्तन साफ करना, झाड़ू देना, पोछा लगाना आदि काम करती है। इन्हीं में से कुछ बच्चों को स्कूल जाने के लिए बस स्टैण्ड तक छोड़ने तथा लाने का काम करती है। इन्हें इनके मालिक महीने में पैसा देते हैं। विशेष परिस्थिति जैसे खुद बीमार पड़ने या परिवार में किसी के बीमार पड़ने पर, शादी–विवाह, पर्व–त्योहारों के अवसर पर अतिरिक्त पैसा देते हैं। साल में एक दो बार इन्हें कपड़ा भी दिया जाता है।

घरेलू कामगार महिला

प्रश्न –

1. दूसरों के घरों में काम करने वाली एक कामगार महिला के दिन भर के काम का विवरण दीजिए।
2. दफ्तर में काम करने वाली महिला और कारखाने में काम करने वाली महिला में क्या–क्या अन्तर है?
3. क्या भविष्यनिधि, अवकाश या चिकित्सा सुविधा शहर में स्थायी नौकरी के अलावा दूसरे काम करने वालों को मिल सकती है? चर्चा करें।

कुछ ही देर में गाड़ी घर पहुँची। लेकिन आज बहुत मजा आया। मैंने सोचा कि कितना अच्छा है कि शहर में इतने सारे लोग इतनी तरह का काम करते हैं। वे कभी एक–दूसरे से मिलते भी नहीं, मगर उनका काम उन्हें बांधता है और शहरी जीवन को बनाए रखता है।

अभ्यास

1. **अपने अनुभव तथा बड़ों से चर्चा कर शहरों में जीवन–यापन के विभिन्न स्वरूपों की सूची बनायें।**
2. **अपने अनुभव के आधार पर नीचे दी गई तालिका के खाली स्थान को भरें :**

स्थान / व्यक्ति के नाम	प्राप्त होने वाले दो वस्तु या सेवाएँ
1. फुटपाथ या पटरी की दुकान	1............................ 2................................
2. बाजार की स्थायी दुकान	1............................ 2................................
3. फैक्ट्री	1............................ 2................................
4. घरेलू कामगार	1............................ 2................................
5. बैंक	1............................ 2................................

3. पटरी पर के दुकानदार एवं अन्य दुकानदारों की स्थिति में क्या अन्तर है?

4. एक स्थायी और नियमित नौकरी, अनियमित काम से किस तरह अलग है?

5. निम्नलिखित तालिका को पूरा करें :

नाम	काम की जगह	काम की सुरक्षा है या नहीं है	स्वयं का काम या रोजगार
श्यामनारायण			
प्रमोद और अंशु			
आकांक्षा			
सरला			

6. एक स्थायी एवं नियमित नौकरी करने वालों को वेतन के अलावा और कौन–कौन से लाभ मिलते हैं?

✣✣✣

राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम

i) सभी तंबाकू उत्पाद हानिकारक हैं।
ii) कोई भी तंबाकू उत्पाद किसी भी मात्रा में सुरक्षित नहीं है।
iii) बीड़ी उतनी ही हानिकारक है जितनी की सिगरेट।
iv) सेकेंड हैंड धूम्रपान भी जानलेवा होता है।
v) तंबाकू चबाने से मुँह के कैंसर सहित कई रोग हो सकते हैं।